

फालो फादर

विदेही और अव्यक्त बापदादा बोले

आज सर्व स्नेही बच्चों के स्नेह का रेसपान्ड करने के लिए बापदादा मिलन मनाने के लिए आये हैं। विदेही बापदादा को देह का आधार लेना पड़ता है। किसलिए? बच्चों को भी विदेही बनाने के लिए। जैसे बाप विदेही, देह में आते हुए भी विदेही स्वरूप में, विदेहीपन का अनुभव कराते हैं। ऐसे आप सभी जीवन में रहते, देह में रहते विदेही आत्मा-स्थिति में स्थित हो इस देह द्वारा करावन-हार बन करके कर्म कराओ। यह देह करावनहार है। आप देही करावनहार हो। इसी स्थिति को “विदेही स्थिति” कहते हैं। इसी को ही फालो फादर कहा जाता है। सदा फालो फादर करने के लिए अपनी बुद्धि को दो स्थितियों में स्थिति रखो। बाप को फालो करने की स्थिति है सदा अशरीरी भव। विदेही भव निकारारी भव। दाता अर्थात् ब्रह्मा बाप को फालो करो के लिए सदा अव्यक्त स्थिति भव, फरिश्ता स्वरूप भव, आकारी स्थिति भव। इन दोनों स्थिति में स्थित रहना फालो फादर करना है। इससे नीचे व्यक्त भाव, देह भान, व्यक्ति भाव, इसमें नीचे नहीं ओ। व्यक्ति भाव वा व्यक्त भाव नीचे ले आने का आधार है। इसलिए सबसे परे इन दो स्थितियों में सदा रहो। तीसरी के लिए ब्राह्मण जन्म होते ही बापदादा की शिक्षा मिली हुई है कि इस गिरावट की स्थिति में संकल्प से वा स्वप्न में भी नहीं जाना। यह पराई स्थिति है। जैसे अगर कोई बिना आज्ञा के परदेश चला जाए तो क्या होगा? बापदादा ने भी यह आज्ञा की लकीर खींच दी है। इससे बाहर नहीं जाना है। अगर अवज्ञा करते हैं तो परेशन भी होते हैं। पश्चाताप भी करते हैं। इसलिए सदा शान में रहने का सदा प्राप्ति स्वरूप स्थिति में स्थित होने का सहज साधन है “फालो फादर”। फालो करना तो सहज होता है ना! जीवन में बचपन से फालो करने के अनुभवी हो। बचपन में भी बाप बच्चे को अंगुली पकड़ चलने में, उठने-बैठने में फालो कराते हैं। फिर जब गृहस्थी बनते हैं तो भी पति पत्नी को एक-दो के पीछे फालो कर चलना सिखलाते हैं। फिर आगे बढ़

गुरु करते हैं तो गुरु के फालोअर्स भी बनते हैं अर्थात् फालो करने वाले। लौकिक जीवन में भी आदि और अन्त में फालो करना होता है। अलौकिक पारलौकिक बाप भी एक ही सहज बात का साधन बताते हैं क्या करूँ, कैसे करूँ, ऐसे करूँ या वैसे करूँ इस विस्तार से छुड़ा देते हैं। सभी प्रश्नों का उत्तर एक ही बात है। “फालो फादर”।

साकार रूप में भी निमित्त बन कर्म सिखलाने के लिए पूरे ८४ जन्म लेने वाली ब्रह्मया की आत्मा निमित्त बनी। कर्म, में कर्म बन्धनों से मुक्त होने में, कर्म सम्बन्ध को निभाने में, देह में रहते विदेही स्थिति में स्थित रहने में, तन के बन्धनों को मुक्त करने में, मन की लगन में लगन रहने की स्थिति में, धन का एक-एक नया पैसा सफल करने में, साकार ब्रह्मा साकार जीवन में निमित्त बने। कर्मबन्धनी आत्मा, कर्मातीत बनने का एकजैम्पुल बने। तो साकार जीवन को फालो करना सहज है ना। यही पाठ हुआ फालो फादर। प्रश्न भी चाहे तन के पूछते, सम्बन्ध के पूछते वा धन के पूछते हैं। सब प्रश्नों का जवाब ब्रह्मा बाप की जीवन है। जैसे आजकल के साइंस वाले हर एक प्रश्न का उत्तर कम्प्यूटर से पूछते हैं। क्योंकि समझते हैं मनुष्य की बुद्धि से यह कम्प्यूटर एक्यूरेट है। बनाने वाले से भी बनी हुई चीज को एक्यूरेट समझ रहे हैं। लेकिन आप साइलेन्स वालों के लिए ब्रह्मा की जीवन ही एक्यूरेट कम्प्यूटर है। इसलिए क्या, कैसे के बजाए जीवन के कम्प्यूटर से देखो। कैसा और क्या का क्वेश्चन ऐसे ही बदल जायेगा। प्रश्नचित के बजाए प्रसन्नचित हो जायेंगे। प्रश्नचित हलचल बुद्धि है। इसलिए प्रश्न का चिन्ह भी टेढ़ा है। क्वेश्चन लिखो तो टेढ़ा बांका हैं ना। और प्रसन्नचित है बिन्दी। तो बिन्दी में कोई टेढ़ापन है? चारों तरफ से एक ही है। बिन्दी को किसी भी तरफ से देखो तो सीधा ही देखेंगे। और एक जैसा ही देखेंगे। चाहे उल्टा चाहे सुल्टा देखो। प्रसन्नचित अर्थात् एक रस स्थिति में एक बाप को फालो करने वाले। फिर भी सार क्या निकला। फालो ब्रह्मा साकार रूप फादर। वा फालो आकार रूप ब्रह्मा फादर। चाहे ब्रह्मा बाप को फालो करो चाहे शिव बाप को फालो करो। लेकिन शब्द वही है फालो फादर। इसलिए ब्रह्मा की महिमा “ब्रह्मा बन्दे जगतगुरु” कहते हैं। क्योंकि फालो करने के लिए साकार रूप में ब्रह्मा ही साकार जगत के लिए निमित्त बने। आप सभी भी अपने को शिवकुमार शिवकुमारी नहीं कहलाते हो। ब्रह्माकुमार ब्रह्माकुमारी कहलाते हो। साकार रचना के निमित्त साकार श्रेष्ठ जीवन का सैम्पुल ब्रह्मा ही बनता है। इसलिए सतगुरु शिव बाप को कहते, गुरु सिखलाने वाले को भी कहते हैं। जगत के आगे सिखलाने वाले ब्रह्मा ही निमित्त बनते हैं। तो हर कर्म में फालो करना है। ब्रह्मा को इस हिसाब से जगतगुरु कहते हैं। इसलिए जगत ब्रह्मा की वन्दना करते हैं। जगतपिता का टाइटिल भी ब्रह्मा का है। विष्णु को वा शंकर को प्रजापति नहीं कहते। वह मालिक के हिसाब से पति कह देते हैं। लेकिन है पिता। जितना ही जगत का प्यारा उतना ही जगत से न्यारा बन अभी अबुक्त रूप में फालो अव्यक्त स्थिति भव का पाठ पढ़ा रहे हैं। समझा, किसी भी आत्मा का ऐसा इतना न्यारापन नहीं होता। यह न्यारेपन की ब्रह्मा की कहानी फिर सुनायेंगे।

आज तो शरीर को भी संभालना है। जब लोन लेते हैं तो अच्छा मालिक वो ही होता है जो शरीर को, स्थान को शक्ति प्रमाण कार्य में लगावे। फिर भी बापदादा दोनों के शक्तिशाली पार्ट को रथ चलाने के निमित्त बना है। यह भी ड्रामा में विशेष वरदान का आधार है। कई बच्चों को क्वेश्चन भी उठता है कि यही रथ निमित्त क्यों बना। दूसरे तो क्या इनको (गुल्जार बहिन हो) भी उठता है। लेकिन जैसे ब्रह्मा भी अपने जन्मों को नहीं जानते थे ना, यह भी अपने वरदान को भूल गई है। यह विशेष साकार ब्रह्मा का आदि साक्षात्कार के पार्ट समय का बच्ची को वरदान मिला हुआ है। ब्रह्मा बाप के साथ आदि समय एकान्त के तपस्वी स्थान पर इस आत्मा के विशेष साक्षात्कार के पार्ट को देख ब्रह्मा बाप ने बच्ची के सरल स्वभाव, इनोसेन्ट जीवन की विशेषता को देख यह वरदान दिया था कि जैसे अभी इस पार्ट में आदि में ब्रह्मा बाप की साथी भी बनी और साथ भी रही ऐसे आगे चल बाप के साथी बनने की, समान बनने की ड्यूटी भी सम्भालेगी। ब्रह्मा बाप के समान सेवा में पार्ट बजायेगी। तो वो ही वरदान तकदीर की लकीर बन गये। और ब्रह्मा बाप समान रथ बनने का पार्ट बजाना यह नूँध नूँधी गई। फिर भी बापदादा इस पार्ट बजाने के लिए बच्ची को भी मुबारक देते हैं। इतना समय इतनी शक्ति को एडजेस्ट करना, यह एडजेस्ट करने की विशेषता की लिफ्ट कारण एक्स्ट्रा गिफ्ट है। फिर भी बापदादा को शरीर का सब देखना पड़ता है। बाजा पुराना है और चलाने वाले शक्तिशाली हैं। फिर भी हाँ जी, हाँ जी के पाठ के कारण अच्छा चल रहा है। लेकिन बापदादा भी विधि और युक्ति पूर्वक ही काम चला रहे हैं। मिलने का वायदा तो है लेकिन विधि, समय प्रमाण परिवर्तन होती रहेगी। अभी तो अठारहवें वर्ष में सब सुनायेंगे। १७ तो पूरा करना ही है। अच्छा—

सब फालो फादर करने वाले सहज पुरुषार्थी बच्चों को सदा प्रसन्नचित विशेष आत्माओं को, सदा करावनहार बन देह से कर्म कराने वाले मास्टर रचयिता बच्चों को, ऐसे बापदादा के स्नेह का, जीवन द्वारा रेसपान्ड देने वाले बच्चों को स्नेह सम्पन्न यादप्यार और नमस्ते।“